International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746, Impact Factor: 5.34
www.newresearchjournal.com/education
Volume 1; Issue 1; January 2016; Page No. 31-32

किशोरावस्था में बालिकाओं पर दूरदर्षन का प्रभाव (फैजाबाद जनपद के नगरीय क्षेत्र के सन्दर्भ में)

Dr. Kusum

Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University Faizabad, India

प्रस्तावना

किशोर या किशोरी के व्यक्तित्व में सबसे प्रमुख भूमिका वैयक्तिक मूल्यो की ही होती है क्योंकि किषोरावस्था में किशोरी को सही दिशा प्रदान करने का अगर किसी को श्रेय जाता है तो वो वैयक्तिक मूल्य ही है। किशोरावस्था उम्र का वह मोड़ है जो बिल्कुल ही स्वछन्द अल्हड़ और अपने में मस्त हो जाता है यह जीवन का सबसे कठिन दौर है भविश्य की नींव भी उसी अवस्था में पड़ती है।

स्टानलेहाल– किशोरावस्था बडे संघर्श, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है।

क्रो एण्ड़ क्रो के अनुसार– किशोर वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।

जरसील्ड के अनुसार– किशोरावस्था वह समय है जिसमें विकासशील व्यक्तित्व बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है।

इंग्लैण्ड की हैडी कमेटी रिपोर्ट के अनुसार– ग्यारह या बारह वर्श की आयु में बालिका की नसो में ज्वर उठना आरम्भ हो जाता है। इसे किशोरावस्था के नाम से जाना जाता है। यदि इस ज्वार का बाढ़ के समय ही उपयोग कर लिया जाये और इस शक्ति और धारा के साथ–साथ नई यात्रा आरम्भ कर दी जाये तो सफलता प्राप्त की जा सकती है। सामान्यतयः 12 से लेकर 19 वर्श तक आयु की बालिकाओ को किशोर वर्ग में रखा जाता है।

इस अवस्था में किशोरियाँ माध्यमिक उच्चतर माध्यमिक तथा स्नातक कक्षाओं की विद्यार्थी होती है। और यही वो समय होता है जब इसकी शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा संवेगात्मक शक्तियों को उचित दिशा दी जाती है। यह दिशा तभी तक ठीक हो सकती है जब इनके वैयक्तिक मूल्यों को ठीक प्रकार से प्रमुखता के रूप में रखा गया हो।

जैसा कि स्पश्ट है कि जीवन के लक्ष्य को खोलने की व्यवहार क्षमता तथा संघर्श से ही मूल्यो की उत्पत्ति होती है और किशोरियों में संघर्श की क्षमता ही इस बात को प्रभावित करती है कि उसका जीवन भविश्य में किस प्रकार का होगा। यदि उसने उच्च आदर्शों को अपनाकर जीवन में कुछ उंचाई तक जाने की ठानी है तो निश्चित ही उसके मुल्य भी उच्च होंगे और निःसंदेह उस बालिका का व्यक्तित्व भी आदर्श व्यक्तित्व होगा।

यह आवश्यक नहीं है कि हर किशोरी से यह अपेक्षा की जाये कि वह शासक जैसे– रजिया बेगम, श्रीमती इन्दिरा गाँधी, लेडी जोन की तरह इतिहास में अपना नाम अंकित करे किन्तु इतनी आशा तो अवश्य की जा सकती है कि वह कम से कम आदर्श जीवन तो व्यतीत करे।

वैयक्तिक मूल्यो के कई प्रकार है–

शैक्षिक मूल्य, –सौन्दर्यात्मक मूल्य, –नैतिक मूल्य, –प्रशासनिक मूल्य, –सामाजिक मूल्य– दूरदर्शन का बालिकाओ के बहुमूल्य पक्षो पर पड़ने वाले प्रभावो के अध्ययन की आवश्यकता

दूरदर्शन आज समाज के हर वर्ग का मनोरंजन का सशक्त माध्यम बन बैठा है किन्तु इसका सबसे अधिक चहेता वर्ग किशोर वर्ग है। आज की किशोरियो के व्यक्तित्व में टेलीवीजन अपनी छटा बिखेर चुका है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम इसके उन प्रभावो के अध्ययन में विषेश स्तर से ध्यान रखें जिसका हमारे किशोरावस्था बालिकाओं पर प्रभाव पड़ता है।

हमारे देश में सर्वप्रथम सरकारी टेलीवीजन की शुरुआत 15 सितम्बर 1959 को दिल्ली से हुई और इसे दूरदर्शन का नाम दिया गया। दूरदर्शन सरकार के द्वारा मनोंरंजन कार्यक्रम जनता के एक एक वर्ग को दिखाता रहा है और आज का दूरदर्शन अपने कई चैनलो के साथ प्रसारित किया जाता है देश का एक विशाल क्षेत्र इससे फैली संस्कृति के प्रभाव में आ रहा है। आज टेलीवीजन कार्यक्रमो का प्रसारण देश के तकरीबन 89 प्रतिशत लोगो तक पहुँच रहा है।

वास्तव में टेलीवीजन की जब शुरुआत हुई थी तो इसे खिलौने से अधिक महत्व नही दिया गया था। किन्तु धीरे धीरे सह गम्भीरता से हमारी सामाजिक जीवचर्या में घुल मिल गया और बाकी के सभी मनोरंजन कार्यक्रमों के माध्यम पर भारी पड़ गये।

मनोंरंजन का यह सशक्त माध्यम दूसरे रुप में समाज के लिए सरदर्द भी बन गया है। जब समाज के हर वर्ग में इसका प्रभाव बड़ी शघ्रता से फैल रहा है। तो सबसे ज्यादा चिन्ता किशोरी वर्ग पर पड़ने वाले प्रभाव से हो रही है क्योंकि किशोर अपनी आयु में इस दौर से गुजर रहा होता है। जब उसके अंदर अनेक प्रकार की संवेग भावनाऐं एक सिरे से दूसरे सिरे की तरफ तेजी से बदल रही होती है।

इस वय में परिवर्तन के रुप कई प्रकार के होते है। शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक इस उम्र में बालिकाओं में कल्पना स्मृति दिवास्वप्नो की अधिकता तर्क निर्णय शक्ति में वृद्वि तथा विरोधी मानसिक दशाओं आदि के गुण पाये जाते है। किन्तु अब समाज का यह वर्ग टेलीवीजन से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की चपेट आता है तो कई प्रकार से उसका प्रभाव अपने उपर ले लेता है। जैसे जो ज्ञान विज्ञान के कार्यक्रमों में रुचि रखतें है उनकी बौद्विक क्षमता तथा तर्क शक्ति उस आयु के अन्य बच्चो मुकाबले में अधिक होजाती है। जो बच्चे हिंसा,चोरी,दादागिरी को प्रदर्शित करने वाले सीरीयल देखते है वो अन्य बच्चों कगे मुकाबले अधिक झगड़ालू प्रवृत्ति के होते है।

सीधा सार्थ है कि इस उम्र में अनुकरण की प्रवृत्ति खास पायी जाती है।

समाजशास्त्र की वरिश्ठ प्रोफेसर बीनादास कहती है कि टीवी नई पीढ़ी का एक दोस्त है जो इस पीढ़ी पर लाख बुराईयाँ थेप रहा है।

किशोरावस्था में बालिकाओ पर दूरदर्शन का प्रभाव जानने के लिए फैजाबाद के कुछ नगरीय क्षेत्र के विद्यालयों को चुना जिसका विवरण निम्नवत् है।

क्र0सं0	विद्यालय का नाम	कक्षा	आयु	विद्यार्थी सं0
1	जे0बी0एकेडमी गद्योपुर	12जी	15–18	10
2	कनौसा कान्वेंट फैजाबाद	12जी	15–18	15
3	टी0टी0 एस0 फैजाबाद	9–12	14–18	10
4	उदया पब्लिक स्कूल फैजाबाद	9–12	14–16	20
5	मनूचा डिग्री कालेज फैजाबाद	बी0ए0	16–19	20
6	गुरु नानक डिग्री कालेज	बी0ए0	16–19	10

प्रभावित स्तर

70 प्रतिशत या इससे उपर	(अ) अप्रभावित
50 प्रतिशत से 69 प्रतिशत	(ब) सामान्य रुप से प्रभावित
30 प्रतिशत से 49 प्रतिशत तक	(स) अति हानिकारक रुप से प्रभावित
0 से 29 प्रतिशत तक	(द) पूर्ण हानिकारक रुप से प्रभावित

बालिकाओं के टेलीवीजन से प्रभावित मूल्य का प्रतिशत

अ– शैक्षिक मूल्य	–41.57ः
ब– नैतिक मूल्य	–65ः
स– प्रसाशनिक मूल्य	–63ः
द– सौन्दर्यात्मक मूल्य	–46ः
य– समाजिक मूल्य	–26ः

बालिकाओं का वर्ग जो कि 13–19 वर्श की आयु वर्ग से सम्बन्धित है। इसमे टेलीवीजन से प्रभावित मूल्यो का प्रभाव स्पश्ट रूप से दृश्टिगोचर होता है। इस वर्ग में सबसे ज्यादा प्रभावित मूल्य समाजिक मूल्य ही है। क्योकि इनका प्रतिशत भी 26.66ः अन्य मूल्यो की अपेक्षा कम आ रहा है। इसके पश्चात शैक्षिक मूल्य भी प्रभावित हो रहें है।

इस पूरे आंकड़े की समीक्षा की जाये तो पता चलता है कि टेलीवीजन में हमारी वो बालिक विद्यार्थी जो कि किशोरावस्था में है। उनके अन्दर के सामाजिक मूल्य पूर्ण हानिकारक रुप से प्रभावित है।